International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 19-02-2026, Accepted: 20-03-2026, Published: 06-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 16-17

समकालीन यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं के कवि: अरुण कमल

डॉ. टिकेन्द्र कुमार यदु
शिक्षक, शा.पू.मा.शा.हिरेतरा, धमधा, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
समकालीन हिंदी कविता में अरुण कमल का काव्य विशेष रूप से समकालीन यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं के गहन चित्रण के लिए जाना जाता है। उनकी कविताएँ आधुनिक जीवन की जटिलताओं, शहरीकरण, अस्तित्व संकट और व्यक्ति के भीतर बढ़ते एकाकीपन को उजागर करती हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में अरुण कमल की कविताओं को समकालीन यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं के केंद्र में रखकर विश्लेषित किया गया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि उनकी कविताएँ केवल समय का दस्तावेज नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर घट रही संवेदनात्मक हलचलों का सशक्त अभिव्यक्ति–क्षेत्र भी हैं।

मूल शब्दः समकालीन यथार्थ, मानवीय संवेदना, शहरी जीवन, अस्तित्व संकट, आधुनिकता

समकालीन हिंदी कविता में बदलते सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश को समझने के लिए अरुण कमल की कविताएँ अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से उस यथार्थ को अभिव्यक्त किया है, जो तेज़ी से बदलती दुनिया में मनुष्य के जीवन को प्रभावित कर रहा है।
आज का समय विकास, शहरीकरण और तकनीकी प्रगति का समय है, किंतु इसी के साथ मनुष्य के भीतर असुरक्षा, अकेलापन और पहचान का संकट भी बढ़ता जा रहा है। अरुण कमल की कविताएँ इसी द्वंद्व को केंद्र में रखती हैं।
अरुण कमल की कविता से कविताओं से होकर गुजरना आत्मीयजन के साथ अविस्मरणीय यात्रा सा अनुभव होता है।यह अपनापन उनके कवित्व और व्यक्तित्व दोनों में एक साथ दिखाई देता है। आज से बरसों पहले अस्सी के दशक में जिसने अपने पहले ही संग्रह में केवल 'धार' को अपनी होने का दावा किया था और सारा लोहा भारत के श्रमजीवी जनता को समर्पित कर दिया था–
"अपना क्या है इस जीवन में/
सब तो लिया उधार /
सारा लोहा उन लोगों का/
अपनी केवल धार।"1

जीवन की सामाजिकता संवेदनात्मकता और श्रम की महत्ता का चित्रण करती हैं।
प्रस्तुत आलेख में अरुण कमल के काव्य को समकालीन यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं के संदर्भ में विश्लेषित किया जाएगा।

समकालीन यथार्थ का सशक्त चित्रण

अरुण कमल की कविताएँ अपने समय के यथार्थ का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब हैं। वे किसी आदर्शवादी या कल्पनात्मक दुनिया की रचना नहीं करते, बल्कि वास्तविक जीवन की परिस्थितियों को सामने लाते हैं। एकांत श्रीवास्तव कहते हैं "अरुण कमल के यहां निजी और सार्वजनिक एकमेक हैं। इसलिए गर्भ का बच्चा भी 'इतना खुला है/ इतना प्रत्यक्ष।' उसके 'सॉन्ग ऑफ माय सेल्फ' (वाल्ट व्हिटमैन की लंबी कविता) में 'सॉन्ग ऑफ यूनिवर्स' शामिल है। कहा भी गया है कि हर अच्छी कविता सबसे पहले आत्मकथा होती है। अरुण कमल अपनी आत्मकथा को कब समाज की कथा में बदल देते हैं – ठीक–ठीक उसे मोड़ का पता नहीं चलता।[2]
शहरों का तेजी से बदलता स्वरूप, जीवन की अनिश्चितता और सामाजिक संरचनाओं का विघटन उनके काव्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। जहाँ कल तक खाली स्थान था, वहाँ आज इमारतें खड़ी हो गई हैं—यह दृश्य केवल भौतिक परिवर्तन का नहीं, बल्कि जीवन की अस्थिरता का प्रतीक है। समकालीन सभ्यता में सामान्य नागरिक के जीवन का सूचकांक हर बार ऊपर उठें, जरूरी नहीं। वह कुछ उठकर फिर बहुत नीचे गिर सकता है। गिरने की आशंका उठने की संभावना से कहीं अधिक है –
"तभी एक दिन देखा उसे मैंने /
पटना के अशोक राजपथ पर/ अगल–बगल सिपाही/ कमर मेरा रस्सा।"3
पूंजी जब तक सभ्यता के केंद्र में रहेंगी तब तक मनुष्यता को हाशिए पर ही अपना जीवन बिताना होगा।
अरुण कमल की कविताएं घटना बहुल हैं। और उनमें प्रायः नाटकीयता भी है। हिंदी कविता में नाटक और कविता के सम्मिलन का दुर्लभ उदाहरण अरूण कमल के यहां देखने को मिलता है। समकालीन यथार्थ का एक महत्वपूर्ण पक्ष स्मृति का संकट है। अरुण कमल यह दिखाते हैं कि बदलते परिवेश में व्यक्ति अपनी स्मृतियों पर भी भरोसा नहीं कर पाता।
पुराने पहचान–चिह्न समाप्त हो जाते हैं और व्यक्ति अपने ही परिवेश में अजनबी बन जाता है। यह स्थिति उसकी पहचान को संकट में डाल देती है। इस प्रकार, उनकी कविताएँ आधुनिक मनुष्य के भीतर चल रहे मानसिक द्वंद्व को उजागर करती हैं–
"समीर मैं दौड़ी समीर/
दूध और खून/
खून/
नहीं नहीं नहीं कुछ नहीं।"4
तेज़ी से बदलते इस युग में मानवीय संवेदनाएँ भी प्रभावित हो रही हैं। अरुण कमल की कविताओं में यह संवेदनात्मक विखंडन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।
मनुष्य के भीतर एक प्रकार का खालीपन और असुरक्षा की भावना घर कर जाती है। वह अपने संबंधों से कटता जाता है और एकाकीपन का शिकार हो जाता है। कवि इस स्थिति को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करते हैं–
"शरणार्थी शिविर अब इस बार नहीं जा पाएंगे/ मन तो बहुत था। पर ठंड लग रही है। ललाट तप रहा है/ ये कैसी हवा है यहां? 'आप और कंबल डाल लो। लेट जाओश।"5
अस्तित्व का संकट और एकाकीपन समकालीन यथार्थ का सबसे गंभीर पहलू अस्तित्व का संकट है। अरुण कमल की कविताओं में व्यक्ति अपने अस्तित्व को लेकर असमंजस में दिखाई देता है।

विकास की अंधी दौड़ में वह अपने ही जीवन के अर्थ को खोता जा रहा है। उसे अपने घर, अपने स्थान और अपनी पहचान तक पहुँचने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। यह स्थिति उसके भीतर गहरे एकाकीपन को जन्म देती है।

समय की कमी और जीवन की विडंबना

अरुण कमल यह भी दर्शाते हैं कि आधुनिक जीवन में समय का अभाव एक बड़ी विडंबना है–

"आज का दिन बहुत खराब रहा /आज मैं बहुत डरावना संसार देखा/ रोज कितने आराम से चला चला जाता था दूर तक टहलता/ आज क्या हुआ कि घने कुहासे में मेरे पांव /एक बूढी औरत की लाश में फंस गए।"[6]

व्यक्ति के पास अपने लिए, अपने संबंधों के लिए और अपने परिवेश के लिए समय नहीं है।

हर बार सही स्थान तक पहुँचने के लिए उसे बार–बार प्रयास करना पड़ता है। यह स्थिति जीवन की जटिलता और अस्थिरता को और अधिक गहरा करती है–

"नहीं कोई तुम्हें कुछ दे नहीं सकता /सब कुछ पाने के बाद भी बेचौन रहोगे/ अपने कवच अपने बख्तरबंद में दबा तुम्हारा दिल/ धौकेगा आंधी–सा अंगारों को सुलगाता /और एक भंवर उठेगी मारोड़ती भीतर।"[7]

अरुण कमल की कविताओं की सबसे बड़ी विशेषता उनकी संवेदनशील दृष्टि है। वे केवल समस्याओं का वर्णन नहीं करते, बल्कि उनके भीतर छिपी मानवीय पीड़ा को भी उजागर करते हैं। उनकी कविताओं में आम आदमी के जीवन की कठिनाइयाँ, उसके संघर्ष और उसकी आशाएँ अत्यंत सजीव रूप में सामने आती हैं। वे मानवीय मूल्यों की रक्षा और उनकी पुनर्स्थापना के पक्षधर हैं।

"अरुण कमल थोड़ा लिखा ज्यादा समझने के काव्य सिद्धांत पर विश्वास करते है। पहली ही कविता जिसके शीर्षक को पूरी पुस्तक का शीर्षक बनाया गया है– महाभारत के मिथ पर आधारित है। यह मिथ का समकालीन संदर्भों से सटीक प्रयोग है। मिथ कविता को अधिक विश्वसनीय और दीर्घायु बनाते हैं। अर्जुन योद्धा थे। एक योद्धा का काम सिर्फ पुतली देखने से चाहे चल जाए, लेकिन कवि का काम नहीं चल सकता। एक कवि को अपनी पुतली में पूरे संसार को जगह देनी पड़ती है। इसके लिए सांसारिकता की सारी सिद्धि चाहे विफल क्यों ना हो जाए"[8]

अरुण कमल की भाषा अत्यंत सरल और सहज है। वे बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हुए गहरे और जटिल यथार्थ को अभिव्यक्त करते हैं।

उनकी शैली में आडंबर नहीं है, बल्कि सीधी और प्रभावी अभिव्यक्ति है, जो पाठक के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ती है। यही कारण है कि उनकी कविताएँ व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचती हैं।

'निष्कर्ष'

अरुण कमल का काव्य समकालीन यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त दस्तावेज है। उन्होंने आधुनिक जीवन की अस्थिरता, स्मृति के संकट, अस्तित्व के प्रश्न और मानवीय संवेदनाओं के विखंडन को अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। उनकी कविताएँ यह दर्शाती हैं कि विकास और प्रगति के इस दौर में मनुष्य अपने ही परिवेश से दूर होता जा रहा है और एक गहरे एकाकीपन का अनुभव कर रहा है।

इस प्रकार, अरुण कमल का काव्य न केवल अपने समय का प्रतिबिंब है, बल्कि वह मानवीय संवेदनाओं की रक्षा और पुनर्स्थापना का एक सशक्त माध्यम भी है।

'संदर्भ ग्रंथ सूची –'

1ण कमल अरूण, प्रतिनिधि कविताएं–धार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली चौथा संस्करण 2020, पृष्ठ 19

2ण श्रीवास्तव एकांत, बढ़ई, कुम्हार और कवि, किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2013, पृष्ठ –227

3ण श्रीवास्तव एकांत, बढ़ई, कुम्हार और कवि,किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2013, पृष्ठ –231

4ण कमल अरूण, प्रतिनिधि कविताएं–धार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली चौथा संस्करण 2020, पृष्ठ 103

5ण कमल अरूण, प्रतिनिधि कविताएं–धार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली चौथा संस्करण 2020, पृष्ठ 94

6ण कमल अरूण, प्रतिनिधि कविताएं–धार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली चौथा संस्करण 2020, पृष्ठ 86

7ण श्रीवास्तव एकांत, बढ़ई, कुम्हार और कवि, किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2013, पृष्ठ –229

8. श्रीवास्तव एकांत, बढ़ई, कुम्हार और कवि, किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2013, पृष्ठ –228